KISHORI SINHA MAHILA COLLEGE

(A CONSTITUENT UNIT OF MAGADH UNIVERSITY)
AURANAGABAD,BIHAR-824101

Dr Arunjay Kumar Singh

Department Of AI&AS

TOPIC-Causes of the Downfall of the Gupta Empire.

Dr. Amarjay kumar Singh
Deptt. of A.I.H.&C.
Date - 21.04.2020

B.A. Part (I) Hons

Paper - (I)

Q. Discuss the causes of the downfall the Gupta Empire.

गुप्त साम्राज्य के पतन के कारणों की विवेचना करें।

ANS: — समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त द्वितीय जैसे गुप्त सम्राटों ने अपनी वीरता, साहस, और योग्यता से एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में गुप्त साम्राज्य अपनी उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच चुका था। स्कन्दगुप्त के समय में यद्यपि हूणों के आक्रमण हुए परन्तु उसने अपने बाहुबल से साम्राज्य की रक्षा की। समुद्रगुप्त के पश्चात गुप्त साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर होता गया और छठी शताब्दी के अन्त तक इस वंश का शासन समाप्त हो गया।

स्कन्दगुप्त की मृत्यु के उपरान्त आन्तरिक दुर्बलता तथा हूण आक्रमण के कारण गुप्त साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। स्कन्दगुप्त की मृत्यु के बाद पुरुगुप्त वृद्धावस्था में सिंहासन पर बैठा। लेकिन वह साम्राज्य को पतन से बचाने में पूर्ण असफल रहा जिसके चलते गुप्त साम्राज्य का पतन हो गया।

गुप्त साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित कारण है जिसमें निम्नलिखित प्रमुख है।

1. अयोग्य सम्राट।
2. आन्तरिक कलह एवं संघर्ष।
3. सामन्तों के विद्रोह।
4. अनेक सरदारों ने गुप्त सम्राट के विरुद्ध विद्रोह।
5. सांस्कृतिक उन्नति।
6. बौद्धनीति का अनुसरण।
7. विदेशनीति का परित्याग।
8. गुप्तकालिन दण्डनीति।
9. बाह्य आक्रमण।

① अयोग्य सम्राट :— स्कन्दगुप्त की मृत्यु के पश्चात् कोई ऐसा गुप्त शासक नहीं हुआ जो देश की एकता के सूत्र में बाँधता। बुद्ध गुप्त और भानुगुप्त और बालादित्य को छोड़कर सभी गुप्त सम्राट अयोग्य हुए जिससे गुप्त साम्राज्य का पतन होना आरम्भ हो गया।

② आन्तरिक कलह एवं संघर्ष :— चन्द्रगुप्त के पश्चात् गुप्तों की आन्तरिक कलह एवं संघर्ष बढ़ती गई। गुप्तों के पतन के लिए आन्तरिक कलह भी जिम्मेदार थी। प्रो० राय चौधरी ने लिखा है कि गुप्त-साम्राज्य के अन्तिम वर्षों में पुत्रमित्रों का विद्रोह, हूणों का आक्रमण तथा प्रान्तीय सामन्तों एवं अधिकारियों की स्वतन्त्र होने की प्रवृत्ति ही पतन के कारण नहीं थे। बाह्य-आक्रमण तथा प्रान्तीय सामन्तों द्वारा आन्तरिक विद्रोह के समय हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि स्वयं गुप्त-वंश में फूट और कलह उत्पन्न हो चुकी थी। चन्द्रगुप्त प्रथम के पश्चात् से ही गुप्त-सिंहासन पर अधिकार करते हुए राजकुमारों में पारस्परिक वैमनस्य उत्पन्न होने लगा था।

ऐसा प्रतीत होता है कि गुप्त-वंश में उत्तराधिकार सम्बन्धी कोई निश्चित नियम नहीं थे। अतः सिंहासन पर अधिकार करने के प्रश्न पर राजकुमारों में परस्पर संघर्ष होने लगता था। ऐसे कठिन समय में, जबकि हूण आक्रमण एवं सामन्तों द्वारा स्वतन्त्रता का प्रयास किया जा रहा था, गुप्त-वंश के राजकुमारों ने एकता प्रदर्शित करने के स्थान पर पारस्परिक कलेश ही उत्पन्न किया, ऐसी स्थिति में पतन होना स्वाभाविक ही था।

③ सामन्तों के विद्रोह :— गुप्तकाल में गुप्त शासकों के अधीन सामन्त शक्तिशाली शासकों के समक्ष तो सेवक के समान आचरण करते थे, परन्तु जब केन्द्रीय सत्ता कमजोर होने लगी तब

सामन्त भी स्वतन्त्र होने के लिए प्रयत्न करने लगे। गुप्त साम्राज्य की आर्थिक स्थिति मालवा पर निर्भर थी। मालवा के गुप्त-साम्राज्य से अलग हो जाने पर इस साम्राज्य की आर्थिक स्थिति भी कमजोर होती गयी जिसके चलते पतन होना आरम्भ हो गया।

(4) अनेक सरदारों ने गुप्त सम्राट के विरुद्ध विद्रोह :— अनेक सरदारों ने गुप्त सम्राट के विरुद्ध विद्रोह किया और साथ ही साथ उत्तर में धीरे-धीरे मौखरी वंश का उत्कर्ष हुआ और छठी शताब्दी के अन्त तक उन्होंने एक स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। अवनति काल के अनेक गुप्त सम्राट बहुत बड़ी-बड़ी उपाधियाँ धारण करते थे, जो इस बात का परिचायक है कि वे स्वतन्त्र रहने के लिए सदैव उत्सुक रहते थे।

(5) सांस्कृतिक उन्नति :— कुछ विद्वानों के अनुसार गुप्त काल में हुई सांस्कृतिक उन्नति भी उसके पतन के कारण हुई। काव्य और कला की उन्नति के साथ समाज में विलासिता की भावना दृढ़ होती गयी। जब तक क्रियाशील और पराक्रमी राजाओं ने राज्य किया तब तक यह विलासिता दबी रही, परन्तु बाद के राजाओं के राज्य में यह विलासिता अपने नग्न रूप में सामने आई और देश में राजनीति के पहलू अलग हो गए। जिससे गुप्त साम्राज्य की नींव कमजोर होती गयी और इस साम्राज्य का पतन हो गया।

(6) बौद्ध नीति का अनुसरण :— गुप्तवंश के अधिकांश सम्राट वैष्णव धर्म के मानने वाले थे। उन्होंने परम भागवत की उपाधि धारण की थी परन्तु बाद के गुप्त सम्राटों ने वैष्णव धर्म त्याग कर बौद्ध धर्म धारण कर लिया। परिणाम स्वरूप वह सैनिक कुशलता के प्रति उदासीन हो गये।

मिहिरकुल ने जब बालादित्य पर आक्रमण किया तब उसने अपने मंत्रियों से कहा, "मैंने सुना है कि चोर आ रहे हैं, और मैं उनसे युद्ध नहीं कर सकता। यदि मेरे मन्त्री मुझे अनुमति प्रदान करें तो मैं कीचड़ में छुप जाऊँ।"

(7) विदेश नीति का परित्याग:— गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवियों के साथ, समुद्रगुप्त ने शक, मुरुण्ड शाही जाति के साथ, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने वाकाटक, नाग आदि के साथ कुछ सहयोग एवं वैवाहिक नीति का अनुसरण किया था, परन्तु परवर्ती गुप्त सम्राटों ने इस विदेश नीति का परित्याग कर दिया। जिससे उसको अन्य लोगों से सहायता प्राप्त न हो सकी जिसके फलस्वरूप गुप्त साम्राज्य का पतन हो गया।

(8) गुप्तकालिन दण्डनीति:— गुप्तकालीन दण्डनीति अत्यन्त नम्र थी। बड़े से बड़े अपराध पर भी कठोर दण्ड नहीं दिया जाता था। उनकी इस नीति से शत्रु ने लाभ उठाया और उनके साम्राज्य के विशाल भवन में घुन का काम कर उसे काट डाला जिसके फलस्वरूप पतन होना आरम्भ हो गया।

(9) बाह्य आक्रमण:— बाह्य आक्रमण भी गुप्तवंश के पतन के मुख्यकारण थे। कुमारगुप्त प्रथम के समय गुप्त-साम्राज्य पर बाह्य आक्रमण होने लगे थे। स्कन्दगुप्त ने पुष्यमित्रों तथा हूणों के आक्रमण को रोकने का घोर प्रयत्न किया परन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात ये आक्रमण निरन्तर बढ़ते गये जिससे गुप्त साम्राज्य का पतन हो गया।

अन्त में निष्कर्ष तौर पर यही कहा जा सकता है कि गुप्त साम्राज्य का पतन अनेक दोषपूर्ण नीतियों एवं परिस्थितियों के फलस्वरूप हुआ।

(THE END)